शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुवाद की भूमिका

डॉ. श्रीमती बिन्दू परस्ते
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुवाद से भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक समानता का पता चलता है। इससे भारत में एकता और अखंडता की भावना पैदा होती है। ज्ञान का प्रचार होता है। भाषा और विचार के बीच संबंध स्पष्ट होता है। अनुवाद से राष्ट्रों के बीच आपसी समझ और सद्भाव बढ़ता है। इसके माध्यम से भारतीय साहित्य को वैश्विक स्तर तक पहुंचाया जा सकता है। इससे पाठों की व्यख्या और निर्वचन में मदद मिलती है। अनुवाद से संस्कृति का संवहन होता है। शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्य सामग्री का स्तर बना रहता है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित होते हैं।

भारत जैसे बहुभाषी देश में एकता और अखंडता को सुरक्षित और सुदृढ़ बनाए रखने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है।

अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है कि विश्व में गीता तथा उपनिषद के ज्ञान का अनुवाद अपने ढंग से किया जा रहा है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय ग्रंथों का अनुवाद चीनी भाषा में हुआ। अनुवाद का महत्व केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है। यह व्यापार, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य कई क्षेत्रों में भी समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद के बिना विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संपर्क स्थापित करना लगभग असंभव हो जाता है।

आधुनिक युग में अनुवाद के महत्व और उपादेयता को विश्व में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के पुनः कथन से लेकर आज के ट्रांसलेशन तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में स्वांतः सुखाय माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है।

दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल के व्यक्ति परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में महसूस की जा रही है।

20वीं शताब्दी के अवसान और 21वीं शताब्दी के पच्चीस वर्षों के बीच आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां हम चिंतन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। भारत में अनुवाद की परंपरा पुरानी है किंतु अनुवाद को जो महत्व 21वीं सदी के उत्तरार्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था।

सन 1947 के बाद देश की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया। विश्व के

अन्य देशों के साथ भारत के आर्थिक राजनीतिक समीकरण बदले। राजनीतिक और आर्थिक कारणों के साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास भी इस युग की प्रमुख दिन है। जिसके फलस्वरुप विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में संपर्क की स्थिति उभर कर सामने आई।

विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच अपनी भाषा में संपर्क स्थापित कर लोकतंत्र में सब की हिस्सेदारी सुनिश्चित की जा सकती है। वस्तुतः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती हुई आदान-प्रदान की अनिवार्यता ने अनुवाद एवं अनुवाद कार्य का महत्व को बढ़ा दिया है।

हमारे देश में अनुवाद का महत्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। प्रो.जी. गोपीनाथ ने ठीक ही लक्ष्य किया है कि अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है।

आज के सिमटते हुए संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है। अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्व मैत्री को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग में अनुवाद की महती आवश्यकता है। भारत की भौगोलिक सीमाएं न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं, बल्कि इस विशाल भूखंड में विभिन्न विश्वासों एवं संप्रदायों के लोग रहते हैं जिनकी भाषाएं एवं बोलियां एक-दूसरे से भिन्न है। भारत में अनेकता में एकता इन्हीं अर्थों में हैं कि विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों, विभिन्न संप्रदायों, विभिन्न विश्वासों के देश में भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बाधित नहीं होती। एक समय में महाराष्ट्र का जो व्यक्ति सोचता है, वहीं हिमाचल का निवासी भी चिंतन करता है।

भारत के हजारों वर्षों के अधिकतम इतिहास चिंतन ने इस धारणा को पुष्ट किया है कि मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन से लेकर आज के प्रगतिशील आंदोलन तक भारतीय साहित्य की दिशा एक रही है। यह बात अनुवाद के द्वारा ही संभव हो सकी है, जिस समय गोस्वामी तुलसीदास जी राम जी के चरित्र पर महाकाव्य लिख रहे थे, हिंदी के समानांतर उड़ीसा में बलराम, बंगाल में कृतिवास, तेलुगु में पोतन्ना, तमिल में कंबन और हरियाणवी में अहमदबक्श अपने-अपने साहित्य में राम जी के चरित्र को नया रूप दे रहे थे। आज की भारतीय संस्कृति जिसे हम सामासिक संस्कृति कहते हैं, उसके निर्माण में हजारों वर्षों के विभिन्न धर्मो, मतों एवं विश्वासों की साधना छिपी हुई है।

साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व आज व्यापक हो गया है। साहित्य आदि जीवन और समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करता है, तो विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से किसी भी समाज देश या विश्व की चिंतन धारा एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है।

साहित्य और अनुवाद का अंतःसंबंध बहुत गहरा और अत्यधिक प्राचीन है। 'गीता' और 'बाइबल' के अनुवाद विश्व की सर्वाधिक भाषाओं में हुए। 'रामायण' और 'महाभारत' दोनों ही महाकाव्य का अनुवाद सरल से सरल शैली में कितनी ही भाषाओं में किया गया। जर्मन कवि गेटे के 'अभिज्ञान शाकुंतलम' के माध्यम से संस्कृत का

महत्व विश्व को ज्ञात हुआ और कालिदास आज विश्वकृति बन गए। विश्व विश्रुत कृतियां एक देश से दूसरे देश में मूल भाषा में अनुदित होकर विभिन्न भाषाओं में जाती हैं, तो अपने साथ विचार और संस्कृति भी ले जाती हैं। मध्यकाल में कई संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया गया। मुगल काल में भी संस्कृत के अनेक ग्रंथों के अनुवाद अरबी-फारसी में किए गए। इसमें 'उपनिषद', 'रामायण' 'महाभारत', 'सिंहासन बत्तीसी' आदिकई ग्रंथ हैं। दाराशिकोह ने 'योग वशिष्ठ' एवं 'भगवद्गीता' का अनुवाद फारसी में किया था। फारसी कवि फैजी ने 'लीलावती' और 'नलदमयंती' कथा का अनुवाद किया था। 'हरिवंश पुराण' का, मौलाना शोरी ने 'जायदे रशीदी' नाम से प्रस्तुत किया था। महाभारत का अनुवाद 'राज्मनामा' नाम से बदायूनी, शेख सुल्तान और नकीब खां ने किया था। पंचतंत्र का अबुलफजल ने 'अनवारे सहेली' नाम से किया था। इस तरह मुगल सम्राट अकबर का समय अनुवाद कार्य की दृष्टि से काफी समृद्ध माना जा सकता है।

साहित्यिक अनुवाद सिर्फ भाषा से भाषा का रूपांतर नही है। वह विचार और संवेदना, संस्कृति और सभ्यता, मूल्य और मानवीय चेतना का भी अनुवाद होता है। साहित्य के अनुवाद ही संसार के अनेक देशों और संस्कृतियों को एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जोड़ते रहे हैं। किसी राष्ट्र के किसी युगविशेष को पढ़ना है तो इतिहास और भूगोल के साथ-साथ उस समय का साहित्य भी पढना चाहिए। साहित्य में राष्ट्रीय और जातीय चेतना की अभिव्यक्ति होती है। काव्य अनुवादक दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो पृष्ठभूमियों के बीच पुल का निर्माण करता है। उसकी इसी दोहरी भूमिका के कारण दुनिया के श्रेष्ठ कवि आज विश्व कृति के रूप में हमारे सामने हैं, जैसे कालिदास, होमर, शेक्सपियर, टालस्टाय, अरस्तु, गेटे, उमर खैयाम, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, मोताले, इलियट आदि।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से अनुवाद का कार्य विधिवत प्रारंभ हुआ। स्वयं भारतेंदु ने शेक्सपियर कृत 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' नाटक का हिंदी में 'दुर्लभ बंधु शीर्षक से अनुवाद किया। यह नाटक महात्वपूर्ण होने के साथ शिक्षाप्रद भी है। भारतेंदु शाब्दिक के स्थान पर भावानुवाद के पक्षधर थे।

भारतेंदु के बाद आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी ने पर्याप्त अनुवाद कार्य किया। कालिदास के कई ग्रंथों के अनुवाद भी किए। 'कुमार संभव' का अनुवाद किया। 'किरातार्जुनीय' की भूमिका में उन्होंने स्पष्ट किया है कि हमारा यह अनुवाद तो परीक्षार्थी छात्रों के लिए है और संस्कृत सीखने की इच्छा रखने वाले और लोगों के लिए। श्रीधर पाठक ने एकांतवासी योगी, उखड ग्राम, भ्रान्त पथिक रचनाएं अनुवाद के रूप में प्रस्तुत की। 'एकान्त वासी योगी' गोल्डस्मिथ के हरमीट का अनुवाद है। हरिओध की वैनिस का बाँका, नीति निबंध, उपदेश कुसुम, विनोद वाटिका, स्फुटकाव्य संग्रह अनुवाद के रूप में प्रस्तुत किए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी अनुवाद में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। बांग्ला भाषा के राखाल बाबू का उपन्यास 'शशांक' अनूदित किया। डॉक्टर ब्राउन के 'फिलॉसफी ऑफ ह्यूमन माईड' के आधार पर लिखा गया सदाचार, स्पेन्सर के प्रोग्राम इट्स लॉ एण्ड कॉलेज के आधार पर लिखी 'प्रगति उसका नियम' और निदान उल्लेखनीय हैं। शुक्ल जी ने अनुवाद के क्षेत्र में अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया। रवींद्रनाथ ने अपनी कविताओं, गीतों का अनुवाद स्वयं किया है। हिंदी में अज्ञेय ने अपनी काफी

कविताओं का अनुवाद स्वयं किया है। डॉ पांडुरंग राव ने 'कामायनी' का तेलुगु में अनुवद्द किया। बच्चन जी ने अंग्रेजी के 'मेकबैथ' का हिंदी में अनुवाद किया। वर्तमान में बहुत से विदेशी कवियों और लेखकों के अनुवाद हिंदी में हो रहे हैं। स्रोत भाषा अंग्रेजी न होने पर मूल से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद हो रहे हैं। आजकल हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाओं में लगातार विदेशी कवियों के अनुवाद प्रकाशित हो रहे हैं। अभी हाल ही में 'सुखनवर' पत्रिका में मणिमोहन द्वारा फलस्तीनी कवि इब्राहिम नसरुल्लाह, कमाल नासिर, अलकासिम की कुछ कविताओं का अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त कुछ अमेरिकी कवियों शेल, सिल्वरस्टिन लैंग्स्टन, ह्यूज और जेमसी रेन्डम की कुछ कविताओं का अनुवाद प्रकाशित हुआ है जो अनुवाद की प्रगति और दिशा को रेखांकित करता है। इन अनुवाद उनकी विशेषता है कि इनमें सहज प्रवाह है।

प्रभात पटनायक का व्याख्यान 'भूमंडलीकरण के संदर्भ में उच्च शिक्षा की वैकल्पिक अवधारणाएँ' नाम से अनुवाद किया जो वसुधा 77 में प्रकाशित हुआ। यह व्याख्यान बहुत महत्वपूर्ण है और आज के दौर में आवश्यक रूप से पठनीय और विचारणीय है। इस दृष्टि से इसका अनुवाद प्रकाशित होना हिंदी भाषियों के लिए महात्वपूर्ण कार्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1 अनुवाद विज्ञान, डॉ. संजू कुमार जैन
2 अंग्रेजी हिंदी कोश, फादर कामिल बुलके
3 सुकरात के मुकदमे डी. डी. कौसाम्बी
4 सुखनवर, मणिमोहन